2

मुग़ल साम्राज्य के अमीर

मनसबदार और अमीर

शासन का काम चलाने वाले कई अधिकारी और कर्मचारी होते हैं। मुग़ल काल में उन्हें मनसबदार कहा जाता था। पूरे मुग़ल साम्राज्य में हज़ारो छोटे बड़े मनसबदार यानी शासकीय अधिकारी व कर्मचारी थे। मनसबदार साम्राज्य मे बादशाह के कानून और आदेश लागू करते थे। वे बादशाह के लिए लगान का हिसाब रखते थे। बादशाह के खिलाफ अगर कोई विद्रोह करे तो मनसबदार विद्रोह दबाते थे। मुग़ल साम्राज्य की रक्षा करना और दूसरे क्षेत्रों में मुग़ल वंश का राज्य फैलाना भी मनसबदारो का काम था। हज़ारों मनसबदारों में से लगभग 500 ऐसे थे जो बहुत ऊंचे अधिकारी थे और उन्हें अमीर कहा जाता था।

यहां मुग़ल साम्राज्य के एक अमीर को दिखाया गया है। जब भी अमीर एक जगह से दूसरी जगह जाते तो वे इसी तरह जाते थे

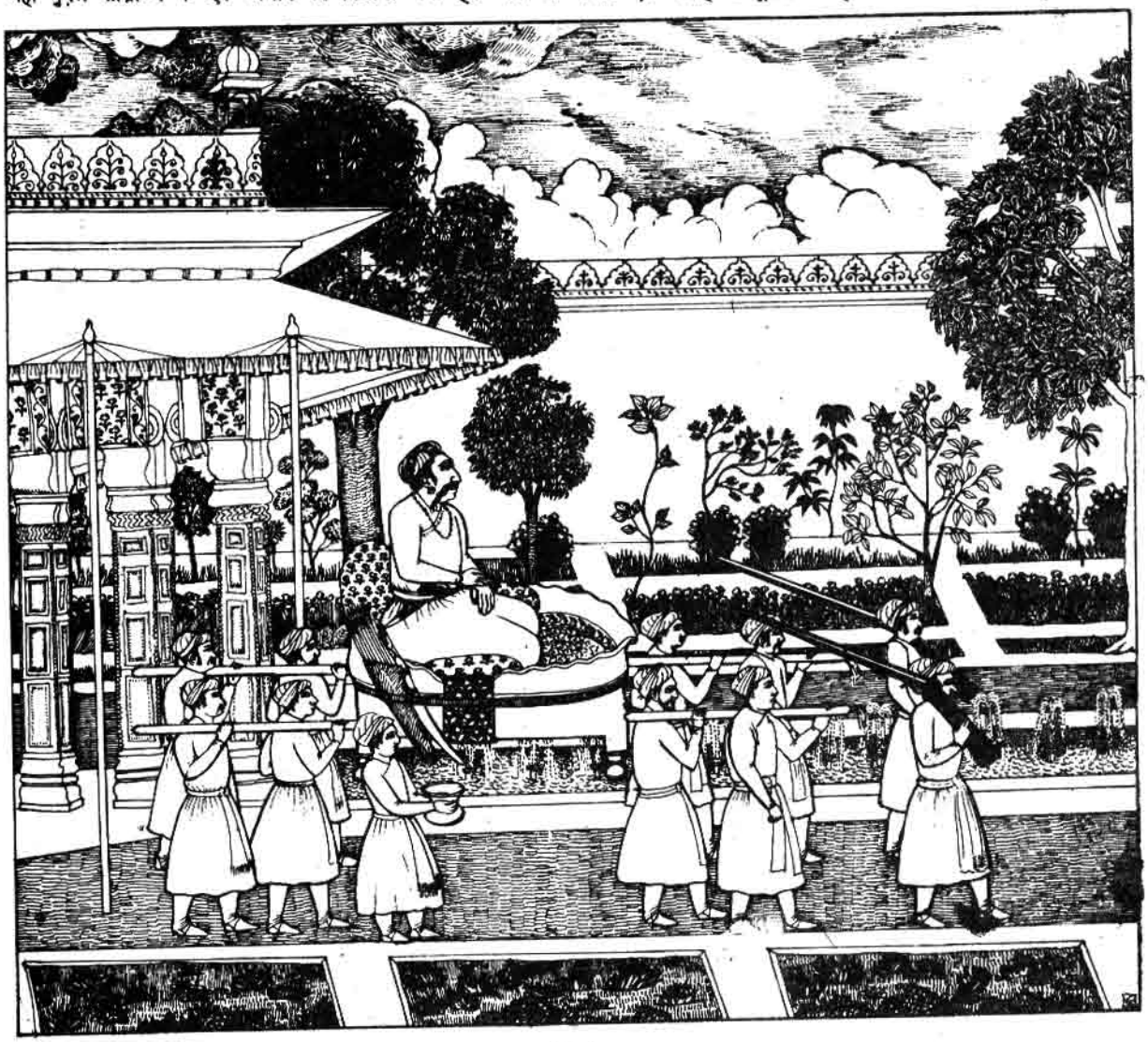

उन दिनो मुग़ल अमीरो यानी बड़े मनसबदारो को जितना वेतन मिलता था, उतना दुनिया के किसी भी अन्य राज्य के अधिकारियो को नही मिलता था। तभी तो मुग़ल अमीर बड़ी शान-शौकत से रहते थे। मुग़ल साम्राज्य मे 8,000 रुपए महीने से ले कर 45,000 रु महीने तक वेतन वाले अमीर थे। इतना वेतन और वो भी तब, जब चीज़ो की कीमते बहुत कम थी। तब एक रुपए मे लगभग 40 किलो गेहूं मिल जाता था।

चलो, पता लगाएं कि मुग़लो के समय मे कोई मनसबदार कैसे बनता था। यह भी जाने कि मुग़ल मनसबदारो और आजकल के अधिकारियो मे क्या समानताएं और क्या अन्तर हैं।

ऊपर दिये चित्र को देख कर मुग़ल साम्राज्य के अमीरों के बारे में तुम्हारे मन में क्या क्या बाते आती हैं - चित्र में दिखाई चीज़ों को देख कर बताओ।

अमीर बाकर खान की जीवनी

मुग़ल काल के एक अमीर की जीवनी पढ़े। इस अमीर का नाम था बाकर खान। वह बादशाह जहांगीर का अमीर था। जहांगीर बादशाह अकबर का बेटा था। सन् 1605 मे अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर मुग़ल साम्राज्य का बादशाह बना। उसी ने बाकर खान को मनसबदार बनाया था।

क्या तुम जानते हो कि आजकल शासकीय नौकरी किस प्रकार मिलती है? कक्षा में चर्चा करो। तुम्हारे अनुमान में बाकर खान को शासकीय नौकरी किस प्रकार मिली होगी?

मनसबदार की नियुक्ति

बाकर खान के पूर्वज ईरानी अमीर थे। उसके पिता रहमत खान अकबर के ज़माने से मुग़लो के मनसबदार थे।

सभी मनसबदारो की तरह रहमत खान का भी एक जगह से दूसरी जगह तबादला होता रहता था। एक बार तबादला हो कर रहमत खान की पोस्टिंग हंडिया मे हुई। उस वक्त तक उनके दो बेटे असफ खान और बाकर खान बड़े हो चुके थे। रहमत खान को अपने बेटो की चिन्ता होने लगी थी। वे सोचते, "पता नही बेटो को बादशाह की नौकरी मिलेगी कि नही।"

रहमत खान और उनके पिता भी मुग़ल बादशाहो की सेवा मे रहे थे। **पर यह ज़रूरी नही था कि पिता के बाद बेटो को भी मनसबदार बना दिया जाए। यह पूरी तरह से बादशाह की मर्ज़ी पर था कि वे किसे मनसबदार बनाते हैं और किसे नहीं।**

एक दिन रहमत खान हंडिया से उज्जैन जाने की तैयारी कर रहे थे। वे एक संदूक मे कुछ गहने, सोने के सिक्के और कीमती ज़री के कपड़े रखवा रहे थे कि बाकर खान कमरे में आया।

बाकर खान ने पूछा, "अब्बाजान, आप यह सब उज्जैन किस लिए ले जा रहे हैं?"

रहमत खान ने जवाब दिया, "बेटे, मै उज्जैन मे मालवा के सूबेदार अब्दुल्लाह खान से मिलने जा रहा हूं। मै चाहता हूं वे तुम दोनो भाइयो की सिफारिश बादशाह जहांगीर से कर दे। सिफारिश वे यूं ही तो नही करेंगे। उन्हें कुछ पेशकश (भेंट) देनी पड़ेगी। इसीलिए ये कीमती चीज़ें ले जा रहा हूं।"

उन दिनो मुग़लो ने अपना साम्राज्य 15 सूबो यानी प्रान्तो मे बांटा था। उनमे से एक सूबा या प्रान्त था

मालवा जिसकी राजधानी उज्जैन थी। सूबे का सबसे बड़ा अधिकारी सूबेदार कहलाता था।

सूबेदार जैसे बड़े अधिकारियों की सिफारिश पर बादशाह नए मनसबदारों को नियुक्त करते थे। इसीलिए बाकर खान के पिताजी सूबेदार अब्दुल्लाह खान से मिलने गए।

सूबेदार साहब सिर्फ बड़े लड़के बाकर खान की सिफारिश करने को राज़ी हुए। उन्होंने बादशाह के नाम एक चिट्ठी लिखी जिसमें बाकर खान की खूब तारीफ की और लिखा कि बाकर खान एक अच्छा तलवार बाज़ है। सूबेदार ने यह भी लिखा कि बाकर खान के पिता रहमत खान एक वफादार मनसबदार हैं। अन्त में सूबेदार ने लिखा कि बाकर खान को एक छोटा मनसबदार बना दिया जाए तो उचित होगा।

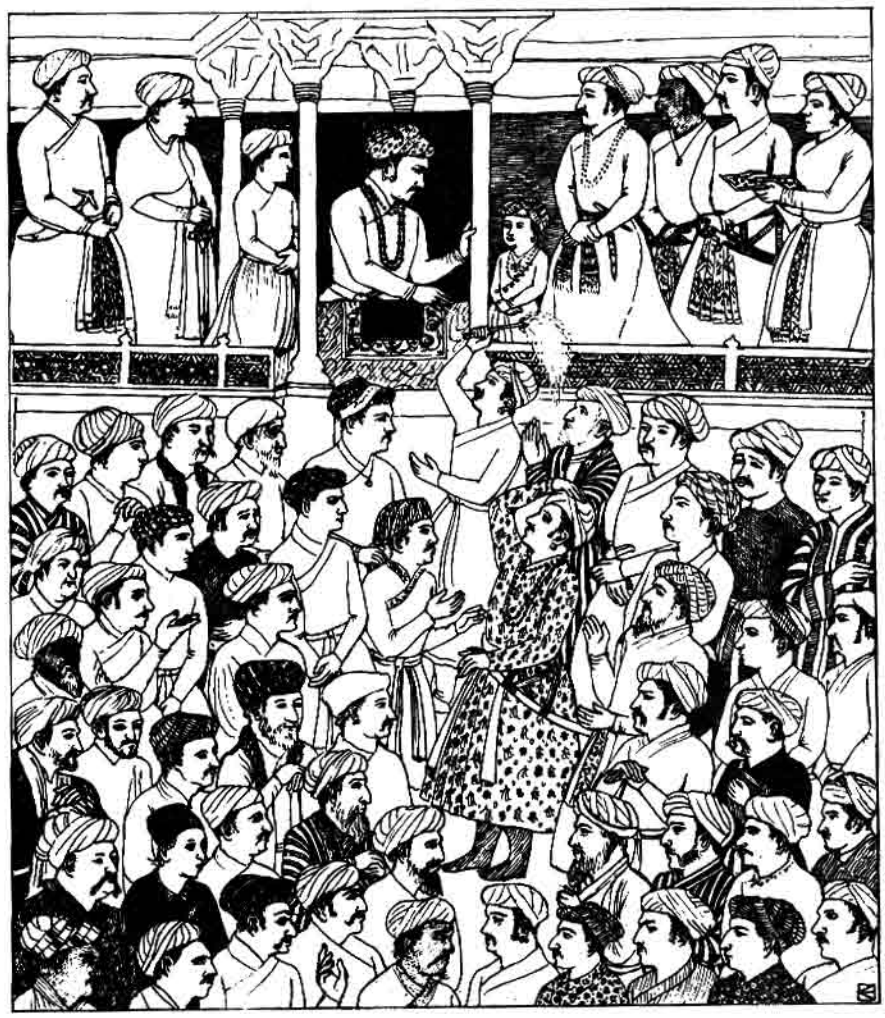

बादशाह जहांगीर का दरबार। बादशाह के आगे कोई बैठ नही सकता था। जो लोग खड़े है उनमे से एक पुर्तगाली पादरी को पहचानो

अपनी चिट्ठी को सूबेदार ने एक हरकारे (डाकिए) के हाथ आगरा भेज दिया। आगरा मुग़लो की राजधानी थी और वहां बादशाह रहता था।

आगरा मे चिट्ठी मीर बख़्शी के हाथ पहुंची। मीर बख़्शी ही वो अधिकारी था जो मनसबदारों की नियुक्तियों की देख रेख करता था। अगले दिन जब बादशाह जहांगीर दरबार मे बैठे थे तो मीर बख़्शी ने उनके सामने मालवा के सूबेदार की चिट्ठी पढ़ी।

जैसा कि पहले भी कहा है मनसबदारों की नियुक्ति के बारे मे बादशाह की इच्छा व पसंद ही सबसे प्रमुख बात थी। जहांगीर को बाकर खान पसंद आया और उसने मालवा के सूबेदार की सिफारिश को मंजूरी दे दी।

जहांगीर ने मीर बख़्शी से कहा, "आप बाकर खान को मनसबदार बनाने का फरमान तैयार करवाइए। बाकर खान को 100 घुड़सवार और 200 घोड़ों की

पलटन रखने की ज़िम्मेदारी दी जाए। उसका पहला काम क्या होगा, यह आप पता कर के मुझे बताइए।"

मीर बख़्शी से पूछताछ कर के बादशाह ने बाकर खान को रायसेन का कोतवाल बनाया।

कुछ दिनों बाद एक शाही फरमान (जिसे हम आजकल सरकारी आदेश कहते हैं) जारी हुआ जिसमें बाकर खान की नियुक्ति की सारी बाते लिखी थी। बाकर खान की तंख्वाह 5,000 रुपए महीने तय हुई थी। 100 घुड़सवारो व 200 घोड़ो की पलटन के लिए उसे अलग से 1,500 रुपए महीने के हिसाब से देना तय हुआ था।

बाकर खान के पास जब फरमान पहुंचा तो वह बहुत खुश हुआ। आखिर वह भी मनसबदार बन गया था।

आजकल से तुलना

मुग़लों के समय सारे अमीरो और अधिकारियो की नियुक्ति इसी तरह होती थी। मगर यह आजकल के अधिकारियो की नियुक्ति से कितना फर्क है। आजकल सरकारी अधिकारियो की नियुक्ति कुछ इस प्रकार होती है। विभिन्न सरकारी विभागो में जो पोस्टें निकलती हैं उनका अखबारो में इश्तेहार निकलता है। इश्तेहार में बताया जाता है कि कितनी पोस्टें हैं, उन्हें पाने वाले की क्या योग्यता होनी चाहिये आदि। कोई भी व्यक्ति उन पोस्टो के लिये आवेदन दे सकता है। आवेदन देने वाले को परीक्षा देनी पड़ती है और फिर इंटरव्यू (साक्षात्कार) देना पड़ता है। जो इन सब मे पास होते हैं उन्हें नौकरी मिलती है। ये नियम हैं। अगर किसी भी नियुक्ति मे इन नियमो का पालन नही हो तो लोग कोर्ट मे मुकद्दमा कर सकते हैं।

मगर ये बातें मुग़लो के समय मे नहीं थी। अगर बाकर खान को नौकरी नही मिलती तो वह किसी नियम के आधार पर कही पर भी शिकायत नही कर सकता था। ख़ैर सौभाग्य से बाकर खान को मनसबदार बना दिया गया था। अब आगे क्या होता है, आओ देखें।

मनसबदार की ज़मानत और सैनिक ज़िम्मेदारी

फरमान पाने के कुछ दिनो बाद बाकर खान मालवा के सूबेदार से मिलने गया। रायसेन, जिसका कोतवाल बाकर खान को बनाया गया था, मालवा सूबे मे ही पड़ता था।

जब बाकर खान सूबेदार अब्दुल्लाह खान से मिला तो वे बोले, "तुम्हें एक छोटा मनसबदार बनाया गया है। अगर तुम अच्छा काम करोगे तो आगे चल कर अपने अब्बा की तरह या मेरी तरह एक बड़े मनसबदार भी बन जाओगे।"

ज़मानत

सूबेदार ने बाकर खान से आगे पूछा, "तुमने अपना ज़मानतदार किसे बनाया है?" बाकर खान ने जवाब दिया, "सेठ हुकुमचन्द अब्बाजान के ज़मानतदार हैं। मुझे अच्छी तरह जानते भी हैं। वे ही मेरी भी ज़मानत दे देंगे।"

उन दिनों मुग़ल मनसबदारो को वेतन लेने से पहले किसी धनी और जाने माने व्यक्ति से अपनी ज़मानत दिलवानी पड़ती थी। अगर मनसबदार पैसो के मामले में कोई गड़बड़ी करे या अपना काम ठीक से नही करे तो बादशाह उसके ज़मानतदार से पैसे वसूल कर के राज्य का नुक्सान भर सकता था।

बाकर खान ने कुछ दिनों में उज्जैन के सेठ हुकुमचन्द से अपनी ज़मानत भरवा ली।

घोड़े रखना

इस प्रकार वेतन पाने के लिए एक शर्त तो पूरी हुई। एक और शर्त बची थी - बाकर खान को बादशाह के लिए 100 घुड़सवार रखने थे।

उन दिनों छोटे बड़े सभी मनसबदारों को कुछ घुड़सवार सैनिक रखने पड़ते थे। किसी मनसबदार को 10, किसी को 100 और किसी को 5,000 घुड़सवारों की टुकड़ी रखनी पड़ती थी।

जब बादशाह को सैनिकों की ज़रूरत पड़ती तो वह आदेश देकर मनसबदारों के सैनिक बुलवा लेता था। बादशाह के पास अलग से अपनी सेना भी होती थी। पर वह हर मनसबदार से भी सेना की टुकड़ी रखवाता था। अपने सैनिकों का वेतन और घोड़ों का खर्चा मनसबदार अपने वेतन से देता था।

इस तरह साम्राज्य में एक बड़ी सेना रखने की ज़िम्मेदारी सभी मनसबदारों के बीच बंट जाती थी। मनसबदार अपने द्वारा रखे सैनिकों का उपयोग अपने प्रशासनिक काम के लिए भी कर सकते थे।

बाकर खान के पिता भी तो मनसबदार थे और वे एक हज़ार घुड़सवार व दो हज़ार घोड़ों की पलटन रखते थे। बाकर खान ने अपने पिता के घोड़ा व्यापारी से मुलाकात की और उसकी सहायता से 200 घोड़े खरीदे। अपने पिता के सैनिकों से कह कर ही उसने उनके गांवों से और आदमी बुलवाए।

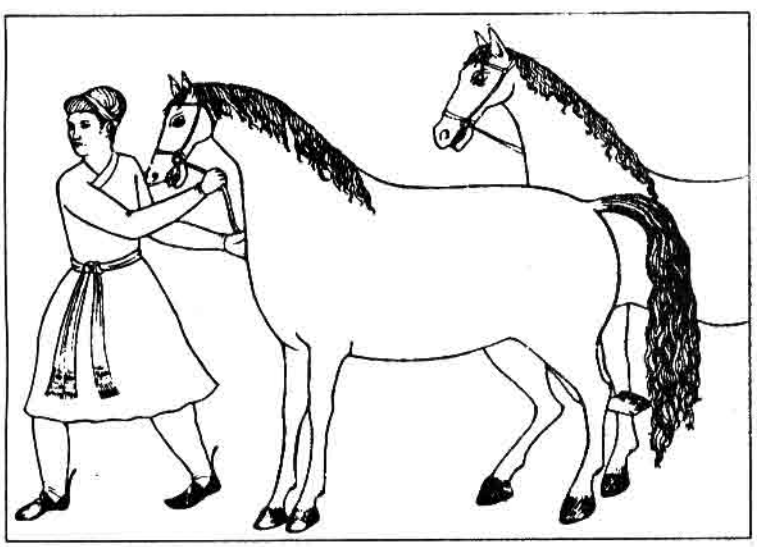

घोड़े खरीदना

इस तरह 100 जवानों को नौकरी में रख कर बाकर खान ने अपनी सेना की टुकड़ी बनाई। यह सारा खर्चा उसने सेठ हुकुमचन्द से उधार ले कर किया क्योंकि उसे अभी वेतन नहीं मिला था।

ये वाक्य पूरे करो :-

1 मुग़लों के समय में सारे अधिकारियों को ....नियुक्त करता था।

2 बादशाह अपने बड़े अमीरों की .... पर नए अधिकारियों को नियुक्त करता था।

3 मनसबदारों को अपने वेतन के पैसे मिलते थे और ..... के भी पैसे मिलते थे।

4 मनसबदार जीवन भर एक जगह व एक ही पद पर ..... रहता था।

बाकर खान ने कोतवाली संभाली

जब सेना की टुकड़ी तैयार हुई तो बाकर खान अपनी नियुक्ति का शाही फरमान ले कर रायसेन पहुंचा। बाकर खान रायसेन पहुंच कर कोतवाली गया और अपना काम संभालने लगा। उसका काम था शहर में चोर डाकुओं को पकड़ना, शहर में शान्ति बनाए रखना, शहर में आने जाने वालों पर और शहर में हो रही घटनाओं पर नज़र रखना।

कुछ महीने इस तरह गुज़र गए। धीरे-धीरे बाकर खान का पैसा ख़त्म होने लगा। ये पैसे सेठ हुकुमचन्द से उसने उधार पर लिए थे। अब सेठ भी अपने पैसे वापस मांग रहा था। बाकर खान को अभी तक वेतन नहीं मिला था।

बाकर खान ने अपने एक आदमी को आगरा भेजा। वह वहां शाही दीवान के

दफ़्तर के चक्कर लगाता रहा क्योंकि वेतन का इंतज़ाम शाही दीवान ही करता था। शाही दीवान नाम का मनसबदार पूरे साम्राज्य की आमदनी और खर्च का हिसाब रखता था।

बाकर खान को जागीर मिली

मुग़लों के समय में अधिकारियों व कर्मचारियों को वेतन दो तरह से दिया जाता था। कुछ मनसबदारों को नगद में वेतन मिलता था। पर अधिकांश मनसबदारों को नगद में वेतन न मिल कर जागीर के रूप में मिलता था। जागीर का मतलब था - किसी क्षेत्र के लोगों से बादशाह का सारा कर वसूल कर के अपने पास रखने का हक।

जैसे, बाकर खान का वेतन 5,000 रुपए महीना था। घुड़सवारों के लिए उसे 1,500 रुपए अलग मिलते थे। इस तरह उसका मासिक वेतन.....रुपये बनता था (खाली स्थान भर दो)। साल भर में बाकर खान को 78,000 रुपए मिलने थे।

बाकर खान के वेतन के 78,000 रुपए का इंतज़ाम करने के लिए शाही दीवान ने मालवा सूबे के ऐसे 40 गांव छांटे जिनसे कुल मिलाकर 78,000 रुपए बादशाह को लगान में मिलने थे। ये 40 गांव देवास के पास थे। शाही दीवान ने देवास के इन 40 गांवों को बाकर खान की जागीर के लिए चुना।

शाही दीवान के कहने पर बादशाह जहांगीर ने एक फरमान जारी किया जिसमें लिखा था कि देवास के उन 40 गांवों का सारा लगान बाकर खान वसूल करके अपने वेतन के बदले में रख ले।

जिन मनसबदारों को जागीर में वेतन मिलता था उन्हें जागीरदार कहा जाता था। इस तरह बाकर खान जागीरदार बन गया, और आखिरकर उसके वेतन की व्यवस्था हो गयी।

एक बात सोचने की है। क्या बादशाह साम्राज्य के सारे गांव-शहर मनसबदारों को जागीर में दे देता था? अगर वह ऐसा करता तो बादशाह का अपना खर्चा किस तरह चलता? दरअसल बादशाह साम्राज्य की लगभग 25% लगान अपने लिए रखता था। राज्य के एक निश्चित इलाके के गांव शहर किसी को जागीर में नहीं दिए जाते थे। इस इलाके के गांव-शहरों की लगान बादशाह के अधिकारी वसूल करते थे और बादशाह को देते थे।

क्या जागीरदार अपनी जागीर की लगान में से कुछ हिस्सा बादशाह को देते थे? अपने उत्तर को कारण सहित समझाओ।

जागीर से लगान वसूल करने का इंतज़ाम

बाकर खान की पोस्टिंग रायसेन में थी पर उसे जागीर देवास में मिली थी। अब उसे अपना वेतन वसूल करने देवास जाना था।

मानचित्र नं 1 में देखो कि रायसेन से देवास कितनी दूर है।

जब बाकर खान को जागीर का फरमान मिला तो वह तुरंत देवास जाने की तैयारी करने लगा।

आमिल

उसके सामने एक समस्या थी। देवास के गांवों से लगान कैसे इकट्ठा करे? आखिर वह खुद हर गांव में जा कर लगान तो नहीं वसूल कर सकता था। बाकर खान एक ऐसे भरोसेमंद आदमी को ढूंढ़ने लगा जो उसके लिए गांव से लगान वसूल कर के ला दे।

कुछ दिनों में उसे एक ऐसा व्यक्ति मिला। वह था रायसेन के ही एक व्यापारी का बेटा बनारसी दास। बाकर खान ने बनारसी दास को अपना आमिल (यानी एजेन्ट) नियुक्त किया।

बाकर खान ने बनारसी दास से तय कर लिया कि लगान लाकर देने के बदले मे बाकर खान उसे कुछ रूपए देगा। फिर बाकर खान ने बनारसी दास से दो हज़ार रुपए ज़मानत ले ली। क्योंकि, अगर बनारसी दास हिसाब मे गड़बड़ करता या लगान लेकर ही भाग जाए तो बाकर खान का बेहद नुक्सान हो जाता। इसलिए बाकर खान ने पहले ही बनारसी दास से ज़मानत ले ली।

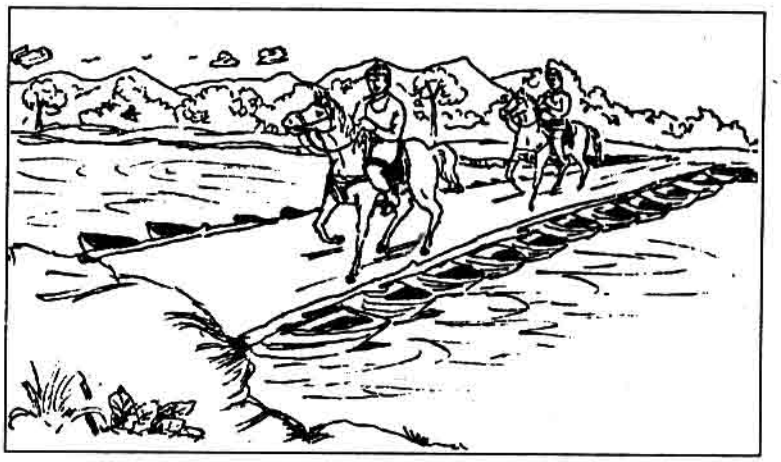

मनसबदार और उसका आमिल देवास की ओर चले। रास्ते मे नावो पर बने पुल से एक नदी पार की

सारी बाते तय कर के बाकर खान और उसका आमिल बनारसी दास देवास के लिए रवाना हुए जहां जागीर के गांव थे। पहले वे दीवान नाम के अधिकारी से मिले।

दीवान ही उस इलाके के गांवो की लगान का सारा हिसाब रखता था।

दीवान ने बाकर खान को उसकी जागीर के 40 गांवो का पूरा ब्यौरा दिया। लगान का हिसाब बता कर दीवान बाकर खान से बोला, "जितनी लगान बादशाह ने तय की है उतनी ही वसूल करना। मुझे किसानो से किसी प्रकार की शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। अगर ऐसी शिकायतें आयी तो मै बादशाह को खबर कर दूंगा। वे तुम्हारे पद और वेतन मे कटौती कर देगे। हां, अगर किसी गांव के किसान लगान न चुकाएं तो फौज़दार से कह देना। वे तुम्हारी मदद के लिये सैनिक भेज देगे।"

दीवान और फौज़दार नामक अधिकारियो से बात कर के बाकर खान और उसका आमिल गांव पहुंचे। उन्होने गांवो के सारे ज़मीदारो, पटेलो व पटवारियो को बुलवाया और उनको जागीर का शाही फरमान दिखाया।

बाकर खान उनसे बोला, "बनारसीदास मेरा आमिल है। वह मेरी तरफ से आप सब से लगान इकट्ठी करेगा। आप लोग इसे पूरी सहायता देवें।"

इस तरह सारा इंतज़ाम कर के बाकर खान रायसेन लौट गया। बनारसीदास ने उसका वेतन गांवो से वसूल किया व उसे ला कर दिया।

तुम अगले पाठ मे पढ़ोगे कि गांवो से आमिल लगान कैसे इकट्ठी करते थे और कैसे कई बार पूरी लगान वसूल नही हो पाती थी। अगर पूरी लगान वसूल नही हो पाती तो जागीरदारो को साल का पूरा वेतन नही मिल पाता था।

सेना का निरीक्षण

एक दिन आगरा से मीर बख़्शी का आदेश आया। दो महीने बाद बाकर खान को अपनी सेना ले कर आगरा बुलाया था। वहां बादशाह द्वारा उसकी सेना का निरीक्षण होना था।

तुम्हें याद होगा कि हर मनसबदार को कुछ निश्चित घुड़सवार रखने होते थे। बाकर खान को 100 घुड़सवार रखने थे। बादशाह देखना चाहते थे कि मनसबदार घुड़सवार रख रहे हैं या नही। इसलिए साल-दो साल मे मनसबदारो की सेना का निरीक्षण होता था जिसमें उनके घोड़ो पर दाग़ या मुहर लगाई जाती थी। साथ

घोड़ों पर दाग़ लगाया जा रहा है

ही उनके सैनिकों का हुलिया (चेहरे का वर्णन) लिख कर आगरा में दर्ज़ किया जाता था। अगर निरीक्षण में मनसबदार अपनी पूरी सेना नहीं ले जाता तो दंड के रूप में उसके पद में कमी की जाती थी।

बाकर खान भी अपनी सेना लेकर आगरा पहुंचा। वहां बादशाह ने खुद मीर बख़्शी के साथ सेना का निरीक्षण किया। तभी घोड़ों पर दाग़ लगाये गये और सवारों का हुलिया दर्ज़ हुआ।

तबादला

मुग़ल साम्राज्य में सारे मनसबदारों का हर साल-दो साल में तबादला हो जाता था। मनसबदारों की जागीर भी बदलती रहती थी। इसके पीछे एक महत्वपूर्ण कारण था। मुग़ल बादशाह नहीं चाहते थे कि उनके बड़े अधिकारी किसी एक क्षेत्र में अपनी ताकत और धाक जमा लें।

अगर कोई मनसबदार कई वर्ष एक ही जगह रहे तो क्या होगा? वह मनसबदार वहां के ताकतवर और प्रमुख परिवारों से रिश्ता बना लेगा। उनकी सहायता से वह बादशाह के खिलाफ विद्रोह भी कर सकता था। इसे रोकने के लिए मनसबदारों का और उनकी जागीरों का लगातार तबादला किया जाता था।

बाकर खान के कई तबादले हुए। कभी मुल्तान कभी आगरा, कभी अवध, कभी बंगाल उसे जाना पड़ा।

साथ-साथ उसकी तरक्की भी होती गयी। 1627 तक आते-आते वह उड़ीसा सूबा का सूबेदार बन गया। तब वह एक बहुत बड़ा मनसबदार बन चुका था, यानी कि एक अमीर बन चुका था। उसकी तंख्वाह अब तीस हज़ार रुपये प्रति माह हो गई थी। उसे 5000 घुड़सवार रखने पड़ते थे - सो उनके लिए अलग से हर महीने 80,000 रुपये मिलते थे।

क) आज के अधिकारियों और मुग़लों के समय के अधिकारियों की तुलना करो।
उनमें तुम्हें किन बातों में समानताएं दिखीं व किन बातों में फर्क दिखा - स्पष्ट करो
- *नियुक्ति का तरीका*
- *निश्चित वेतन*
- *वेतन पाने का तरीका*
- *तबादला*
- *सेना रखने की ज़िम्मेदारी*

ख) मुग़ल बादशाह अपने अधिकारियों की इन कामों पर किस तरह नियंत्रण रखते थे?
- *सेना रखने की ज़िम्मेदारी*
- *लगान की वसूली।*

मुगल अमीर का घर बार

बाकर खान को तीस हज़ार रुपये हर महीने मिलने लगे थे और वह भी ऐसे समय में जब एक रुपये में 40 किलो गेहूं मिले। बाकर खान इतने रुपयों का क्या करता होगा? चलो, ज़रा उसके घर बार को झांक कर देखें।

बाकर खान एक विशाल महल में रहता था। मगर बाहर सड़क से उसका महल नहीं दिखता था, ऊंची-ऊंची दीवारों से जो घिरा हुआ था।

बाहरी दीवार में एक दरवाज़ा था जिसमें 20-30

पहरेदार पहरे देते रहते थे। अन्दर एक विशाल बाग था जिसके बीच में बाकर खान का महल था। बाग के बीच से संगमरमर की बनी नहर थी जिसमें ठंडा पानी बहता रहता था। जगह-जगह सुन्दर फव्वारे भी थे। नहर के दोनों तरफ चलने के लिए रास्ते थे और उसके बाद चौकोर घास के मैदान जिसके अन्त में फूलों की क्यारियां और कतार में खड़े पेड़ थे।

बाकर खान का महल अधिकतर पत्थर का बना था। उसमें अनेकों बड़े कमरे थे। पूरे कमरे में ज़मीन पर कीमती कालीनें बिछी रहती थी। दीवारों में आले थे जिनमें चीन और ईरान से आये प्याले, सुराहियां रखे रहते थे। दीवार सुन्दर तराशे हुए पत्थरों की बनी थी। बाकर खान का खास कमरा संगमरमर का बना था जिसमें कीमती रंगीन पत्थरों को गाड़कर सुन्दर चित्र बनाये गये थे। छत चांदी और सोने से रंगी गयी थी। गर्मी के मौसम में ठंडक के लिए ज़मीन के नीचे कमरे बने थे।

मुग़ल अमीर के महल में उसकी पत्नियां

बाकर खान की चार बीवियों के लिए भी अलग-अलग घर बने थे। प्रत्येक बीवी की सेवा में 40-50 गुलाम रहा करते थे।

बाकर खान और उसकी पत्नियों को कीमती हीरे-मोती के जवाहरात का खास शौक था - दूर-दूर के व्यापारी ये चीज़ें बेचने आये दिन आते रहते थे। सुन्दर और कीमती कपड़ों और लिबासों की बात ही अलग थी। वे एक दिन पहना कपड़ा दूसरे दिन नहीं पहनते थे।

महीन से महीन मलमल के कपड़े, रंग बिरंगे रेशमी कपड़े, सोने-चांदी के ज़री के कपड़े - उनकी आम पोषाकें थी।

उनका भोजन भी उन दिनों का सबसे मंहगा भोजन था। शराब ईरान से और बर्फ कश्मीर से लायी जाती थी। उनके अपने बगीचे भी थे जिनमें देश विदेश के फल उगाये जाते थे।

उन दिनों के अन्य अमीरों की तरह बाकर खान को भी अजीबो-गरीब जानवर व पक्षी पालने का शौक था। ऊंट, हाथी और घोड़ों के अलावा कई शेर, चीते, हिरन, बाज़, रंग-बिरंगे तोते और मोर उसके महल में पलते थे। जानवरों को आपस में लड़ा कर लड़ाई देखना उनके लिए मनोरंजन का एक तरीका था।

बाकर खान के महल के पास ही उसका कारखाना भी था। मगर आजकल के कारखाने जैसा नहीं था। उसमें बाकर खान और उसके परिवार के उपयोग के लिए तरह-तरह की चीज़ें बनती थी। कपड़े, कालीनें, सोने-चांदी के गहने, लकड़ी की चीज़ें, ये सब उनके अपने कारखाने में बनती थी। इन्हें बेचा नहीं जाता था। ये चीज़ें सीधे बाकर खान के घर में उपयोग की जाती थी। इन कारखानों में शहर के मशहूर कारीगरों को अक्सर ज़बरदस्ती लाकर काम करवाया जाता था।

एक लाख रुपये जागीर से वसूल करने होते थे। इस काम के लिए बाकर खान के कई सारे आमिल

थे। इन आमिलो के काम पर निगरानी रखने, इकट्ठे किए पैसो का हिसाब लिखने आदि काम के लिए महल मे कई मुन्शी और नौकर भी होते थे।

इतना बड़ा घर बार, इतने सारे नौकर चाकर, इन सब पर बहुत खर्च होता था। फिर समय-समय पर बादशाह, शहज़ादो और बड़े अधिकारियो को कीमती भेट भी देनी पड़ती थी।

अपने ऊपर धन खर्च करने के अलावा बाकर खान जैसे मनसबदार आम लोगो की सुविधा की चीज़े बनवाने मे भी कुछ धन खर्च करते थे।

अपनी इस ऊंची तंख्वाह मे से बाकर खान ने अपनी जागीर के आम लोगो के लिए दो मस्जिदे बनवाईं। उसने यात्रियो के ठहरने के लिए एक सराय भी बनवाई। अगर बाकर खान की जगह कोई राजपूत अमीर होता तो वह मन्दिर और पाठशालाएं बनवाता। ईरानी-तुरानी अमीरो की तरह राजपूत व शेखज़ादा अमीर भी बहुत ठाठ बाठ से रहते थे। उनके भी आलीशान महल थे, सैकड़ो नौकर चाकर थे, दास दासियां थी, कई पत्नियां थी। राजपूत मनसबदारो के आलीशान महल आज भी राजस्थान मे देखे जा सकते हैं।

० ० ० ० ० ०

अभ्यास के प्रश्न

1. बाकर खान को सरकारी नौकरी कैसे मिली? क्या आज भी सरकारी नौकरी उसी तरह मिल सकती है?
2. मनसबदारो की ज़मानत कौन देता था? ज़मानत क्यो ली जाती थी? क्या आज भी ऐसा होता है?
3. बाकर खान ने अपना आमिल किस काम के लिए नियुक्त किया? उसने उससे ज़मानत मे पैसे क्यो लिए?
4. बाकर खान की सेना का निरीक्षण किस तरह हुआ और क्यो?
5. अगर तुम्हे बाकर खान का घर बार देखने का मौका मिलता तो तुम्हे जो-जो दिखता, उस पर 6 वाक्य लिखो।
6. तुमने कक्षा-7 मे भोगपतियो के बारे मे पढ़ा था। राजा अपने अधिकारियो को वेतन के बदले गांव भोग करने को देता था। भोग के गांव से वे मनचाहे कर वसूल सकते थे और इच्छानुसार शासन चलाते थे।

   भोग के गांव उसी अधिकारी व उसके वंशजो के पास रहते थे।

   मुग़ल राज्य के जागीरदारो और भोगपतियो के बीच तुम्हे क्या अन्तर और क्या समानताएं दिखती है?

   भोगपति या जागीरदार, दोनों मे से किस पर राजा का ज़्यादा नियंत्रण रहता था?

उन दिनो दुनिया में सबसे अधिक वेतन पाने वाले अधिकारियो के जीवन की ये झलकियां तुमने देखीं। अब अगले पाठ में मुग़ल काल के गांवो की झलक देखो।